छूत के रोगों की रोकथाम

कुलभूषण नागल, रमेश चन्द कटोच व मनदीप शर्मा
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय (हि०प्र०कृ०वि), पालमपुर

पशुओं में कई प्रकार के छूत के रोग जीवाणुओं और विषाणुओं द्वारा होते हैं। यह छूत के रोग एक पशु से दूसरे पशु को बहुत जल्दी लगते हैं और यदि समय पर इनसे बचाव न किया जाए तो पशुओं के झुण्ड के झुण्ड इनके लपेट में आ जाते हैं।

इस रोगी पशुओं में शरीर की शिथिलता के साथ उनकी उत्पादन क्षमता पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है और कुछ पशु मर भी जाते हैं।

छूत के रोगों का इलाज व बचाव निम्नलिखित ढंग अपनाकर किया जा सकता है :

1 पशुओं को समय पर बचाव के टीके लगवा कर।
2 रोगी पशुओं को अन्य पशुओं से तुरन्त अलग कर दें तथा इनके पोषण व आवास का अलग से प्रबन्ध करें।
3 रोगी पशुओं का शीघ्र ही इलाज करके रोग अन्य पशुओं में फैलने से रोका जा सकता है।
4 मरे हुए पशुओं को ठीक ढंग से भूमि में गडवा दें ताकि रोग फैलने न पाए।

बचाव के टीके

गल घोटू : यह रोग अधिकतर बरसात के मौसम में होता है, इसलिए रोकथाम के टीके बरसात आरम्भ होने से 1-1/2 मास पहले (मई के अंत तक) अवश्य लगवा लेने चाहिए। टीके लगवाने के बाद एक वर्ष तक इस बीमारी से प्रतिरक्षा रहती है। इस बीमारी का टीका हर वर्ष लगवाना आवश्यक है।

लंगड़ा बुखार : यह रोग भी बरसातों में होता है। इसलिए इसके बचाव का टीका भी मई के अंत तक लगवाना चाहिए। गल घोटू और लंगड़ा बुखार के बचाव टीकों में कम से कम 10-15 दिन का अन्तर होना आवश्यक है। इस टीके का प्रतिरक्षा प्रभाव भी एक वर्ष तक रहता है।

खुर मुंही : यह छूत का रोग अधिकतर दोगली नस्लों व विदेशी नस्लों के पशुओं में बहुत अधिक मात्रा में होता है तथा दूध पी रहे बछड़े व बछड़ियों में मृत्यु दर काफी अधिक है। इस रोग से रोकथाम के टीके पशुओं में छोटी उम्र से लगवाने शुरू कर देने चाहिए।

बछड़े व बछड़ियों में पहला टीका 1 से 2 मास की उम्र में तथा दूसरा टीका 4 से 6 मास की उम्र में लगवाएं। इसके उपरान्त प्रत्येक 6 मास की अवधि पर टीकाकरण करवाएं।

बड़े पशुओं में पहला टीका 4 से 6 मास की उम्र में तथा दूसरा टीका पहले टीके के 2 से 4 मास के बाद लगवाएं।

इसके उपरान्त प्रत्येक वर्ष में मध्य मार्च व मध्य सितम्बर में टीका लगवाएं।

शीतला माता (रिन्डर पैस्ट) : यह रोग सब से भयानक छूत का रोग है। इस रोग का टीका लगवाने में

कभी भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए। देसी नस्ल की गऊओं में बकरियों की तिल्ली वाला टीका (जी.टी.वी.) लगाया जाता है जिससे लगभग 8 वर्ष तक प्रतिरक्षा रहती है। विदेशी व दोगली नस्लों में टिश्शू कल्चर वाला टीका लगाया जाना चाहिए तथा अगला टीका दो वर्ष की अवधि के उपरान्त लगवाना चाहिए।

अगर बचाव टीका लगवाने के उपरान्त या बचाव का टीका नहीं लगवाने के कारण रोग हो जाता है तो अपने स्थानीय पशु चिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क करें तथा रोग के लक्षणों के विषय में विस्तार पूर्वक अवगत करवाऐं ताकि बिना समय नष्ट किए रोग को फैलने से रोका जा सके।

रोगी पशुओं को अलग रखें

किसी भी प्रकार के रोग का आभास होने पर विशेषकर छत के रोग होने पर रोगी पशुओं को अन्य पशुओं से अलग रखें तथा तुरन्त पशु चिकत्सिक की सहायता प्राप्त करें। अगर संम्भव हो तो रोगी और स्वस्थ पशुओं की देखभाल अलग-अलग मनुष्यों को करनी चाहिए ताकि रोग और अधिक न फैल सके। रोगी पशुओं की देखभाल के बाद हाथ-पांव व अन्य सामान को अच्छी प्रकार साबुन से धोना अति आवश्यक है।

मरे पशुओं का निदान

संक्रामक रोगों की रोक-थाम के लिए जितना आवश्यक बचाव के टीके लगवाना है उतना ही आवश्यक है मरे हुए पशुओं की विशेषज्ञों द्वारा जांच करवाना। इससे तुरन्त सही रोग का पता लगाया जा सकता है। मरे हुए पशु रोग फैलाने का एक मुख्य कारण हैं। मरे हुए पशुओं को उपयुक्त रूप से छः फुट गहरे गड्ढे में लगभग तीन किलोग्राम की चूने की परत बिछा कर डाल दें तथा उपर भी तीन किलोग्राम के लगभग चूना और दो से तीन किलोग्राम सादा नमक डाल दें। इस पश्चात गड्ढे को मिट्टी से पूरा भर दें। उसके ऊपर कांटेदार झाड़ियां व पत्थर रख दें ताकि जंगली पशु व कुत्ते इत्यादि इसे खोल न सकें। पशुओं का बचा हुए चारा, गोबर तथा अन्य सामान भी साथ में दबा दें या जला दें। पशुओं के बांधने वाले स्थान को फिनाइल के घोल या अन्य किटाणु-नाशक रसायन से फर्श, खुरली व तीन चार फुट तक दीवारों को भी धो देना चाहिए।